P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-V* October - 2015

हिन्दी साहित्य में विधवा विमर्श : दिशा और दशा

रणजीत कुमार सिन्हा
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
खडगपुर कालेज,
खडगपुर, पश्चिम मिदनापुर

सारांश

भारतीय समाज में विधवाओं को किस तरह समाज में एक बोझ के रूप में देखा जाता है, उनके जीवन को समाज और संस्कार नामक जंजीर में कैद करके, दम तोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है, वैदिक काल में विधवाओं की जो दशा थी वह परिवर्तित काल में और ही कष्टदायक हो गई, समाज में किस तरह उन पर घर के लोग ताने मारते है, मानसिक रूप से शोषण करते है, सम्पत्ति से बेदखल करते हैं, और तो और अगर वो (विधवा) आर्थिक रूप से विपन्न है तो वह मरन रूपी जीवन जीती है। तो कहीं समाज के सुनाम धन्य लोगों की वासना की शिकार होती नजर आती है। कहीं पर पागल तो कहीं पर डायन था अशुभ या कर्मजली की उपाधी से नवाजी जाती हैं।

मुख्य शब्द : तिरस्कार, दमन, शोषण (मानसिक, शारीरिक, आर्थिक) उपेक्षा, सम्पत्ति के अधिकार से वंचित।

प्रस्तावना

विधवा की समस्याओं पर अन्य भारतीय साहित्य की तरह हिन्दी साहित्य में भी काम हुआ है। समाज में व्याप्त बाल विधवा की स्थिति, कम उम्र में पति खोने वाली स्त्री की दशा तथा समाज में किस तरह विधवाओं के साथ दोहरे मानदण्ड अपनाए जाते है, प्रस्तुत शोध पत्र में उसे ही प्रस्तुत करना है।

हिन्दी साहित्य में विधवा विमर्श की बाते प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद से शुरू होती है, कारण इससे पहल समाज में व्याप्त नहीं हुये और बाल–विवाह जैसे कुरीतियों, रूढ़िता को तोड़ने का काम राजा मोहन राय करते हैं। देवरानी–जेठानी में सर्वप्रथम पंडित गौरी दत्त ने विधवाओं के सामाजिक स्थितियों का चित्रण किया (1870) में और विधवाओं को दोबारा घर बसाने की वकालत किए जो की एक समाज के प्रति लोकहित का कदम माना जाता है, देवरानी–जेठानी में गौरी दत्त जी विधवाओं के पक्ष में दलिल पेश करते हुए कहते हैः–

"जिस विवाहिता के उसके पति से संभाषण नहीं हुआ और विवाह के पीछे पति का देहान्त हो जाए तो वह पुर्नविवाह के योग्य है।

भारतेन्दु युग जिसे पुर्नजागरण काल भी मानकर चले कारण इस युग में भारतीय समाज में व्याप्त सभी समस्याओं को उकेरा गया है। प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु मंडल के कवि एवं निबन्धकार थे जिन्होंने 'अपनी कविता' मन की लहर में विधवाओं की दर्द को उकेरते ह–

कौन करेजा नही कसकत,
सुनि विपति बाल विधवन की।।

हिन्दी नाटकों, कहानियों, कविताओं में भी विधवाओं के दिशा और दशा पर प्रकाश डाला गया है, रायकृष्ण दास का दुखि–नीव्राला नाटक, राधाचरण गोस्वामी का, विधवा–विपत्ति उपन्यास, जयशंकर प्रसाद ने चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, प्रेमचन्द की कथा साहित्य मिथ लेखा की गंगिआ बुगा कहानी में, शिवानी के उपन्यास भैरवी में, मेहरुन्निसा परवेज बड़ी उपन्यास कोरजा में, शुभ्रा वर्मा की उपन्यास एक औरत में।

1962 में प्रकाशित 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिन्दी की पहली मौलिक कहानी हैं यहां पर जमींदार ने जुल्म और ह्रदय परिवर्तन की कथा है। एक गरीब अनाथ विधवा की मातृ भूमि के प्रति प्रेम और लगात की प्रतीक है, यहां पर विधवा विलाप है पर वह विलाप व्यक्तिगत स्वार्थ से रहित है और परोपकारी सद्भाव से है।

भारतीय समाज में विधवाओं के नाटकीय जीवन यापन करने के पीछे आर्थिक कारण ही मूल है, कथा सम्राट प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों से ज्ञात होता है। जो विधवा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है उनके यहां था उनके परिवार में समस्या नहीं है, कर्म भूमि उपन्यास की विधवा रेणुका देवी को देखें रेणुका देवी का परिवार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने के कारण विधवा समस्या वहां पर नगण्य है।

विधवाओं की दीन हीन और तिरस्कृत रूप ने हिन्दू समाज की नारी की सबसे बड़ी त्रासदी है। डॉ. महेन्द्र भटनागर के शब्दों में ''वर्तमान हिन्दू समाज में समग्र नारी जीवन पुरूष वर्ग का तिरस्कार, दमन तथा उपेक्षा भावना का शिकार है लेकिन सबसे अधिक अत्याचार और शोषण को प्रतिमूर्ति एकमात्र विधवा ही है।[2]

प्रेमचंद का कथा साहित्य–समीक्षात्मक मूल्यांकन–डॉ. मीना गुप्ता– पे. 137

प्रेमचन्द्र के 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में विधवा समस्या है वरदान। निर्मला में यह समस्या गौण रूप है जबकि कर्मभूमि में नगण्य है, निर्मला उपन्यास में तोता राम की बहन जो विधवा है वह किस तरह से यातना झेल रही है। रूकमणी दोनों धरातलों पर पारिवारिक और सामाजिक दीन–हीन, उपेक्षित एवं तिरस्कृत जीवन जीवन में बाहय है। ''जब घर के घर में भाई के द्वारा विधवा बहन तिरस्कृत हो सकती है, तो नाना कृसंस्कारों से ग्रस्त समाज में उसके लिए क्या स्थान हो सकता है।''[3]

वही पेज–137

विधवा अगर किसी परिवार में रहती है और बैठे–बैठे खाती है तो वह पूरे परिवार के लिए बोझ बन जाती है, लोग उसे तंग करने के लिए कोई भी कसर नहीं छोड़ते हैं, सुभागी कहानी की विधवा 'सुभागी' की समस्या भी यही है, पिता के घर में रहती है पर भाई–भौजाई से नहीं पटती है दिन–रात झगड़ा होता है, अतः पिता को अपने बेटे से अलग होना पड़ता है। निर्मला उपन्यास में भी हम ऐसी तीन विधवा नारियो को पाते हैं, जो जीवन का भार होती हैं– कल्याणी, निर्मला, सुधा।

निर्मला उपन्यास में विधवा बनने के पीछे तीनों की अलग–अलग कथा है। निर्मला अनमेल विवाह के चलते विधवा बनी, तोताराम की विधवा बहन की कष्ट का कारण निर्मला, तोताराम के शब्दों स– ''इस घर की मालकिन वह नहीं तुम हो, वह केवल तुम्हारी सहायता के लिए है। मैने सोचा था कि विधवा है, अनाथ है, पाव भर आटा खायेगी पड़ी रहेगी, जब और नौकर–चाकर खा रहें हैं तो वह अपनी बहिन ही है, लड़कों के देख–भाल के लिए औरत की जरूरत भी थी, रख लिया, लेकिन इसक माने यह नहीं कि वह तुम्हारे ऊपर शासन करे।''

निर्मला पेज–75

बेटों वाली विधवा में प्रेमचंद भारतीय संयुक्त परिवार को अपनी विसंगतियों, स्वार्थ, लोभ आदि को चित्रण करते है, चार संतानों की माँ होकर भी पति की तेरहवीं के अवसर पर उसे ज्ञात हो जाता है कि विधवा स्त्री की औकात क्या है, बहु बेटों से तिरस्कार, बेटी को विदा करते समय कुछ न दे पाना, बेटों द्वारा घर–सम्पत्ति, गहने हड़प लेना, घर की मर्यादा के नाते वह घर तो नहीं छोड़ती पर सारे परिवार से कट कर एक कोठरी में जीवन गुजारती है फूलमती, और एक दिन स्वयं को गगा में विसर्जन कर देती है, मालकिन फूलमती विधवा होते ही नौकर बन जाती हैं घर की, बेटों के सुख चैन के लिए।

'बालक' कहानी में प्रेमचंद ने विधवा समस्या और विधवा विवाह को समाज सुधार के परिप्रेक्ष्य में लाते हैं, बालक कहानी में गोमती तीन बार पति को छोड़कर विधवा आश्रम लौट जाती है और गोमती गर्भवती है और गंग ब्राह्मण उसी से शादी करना चाहता है। बालक के पिता के प्रश्न पूछने पर गंगू का जवाब तर्कसंगत और बुद्धिगम्य है– ''यह बच्चा मेरा बच्चा है। मैने एक बोया हुआ खेत लिया, तो क्या उसकी फसल को इसलिए छोड़ दूँगा कि उसे किसी दूसरे ने बोया था।''

बालक कहानी पेज–137

डॉ. राम विलास शर्मा के 'नरक का मार्ग' कहानी में विधवा की दयनीय और तिरस्कृत दशा देखने का मिलता है, प्रस्तुत कहानी के समस्याओं पर विचार करते हुए वे लिखते हैं– 'विधवा जीवन इतना कटु और निर्दय बन गया है कि उससे वेश्या जीवन भी ब्रेदस्कर है।

समस्या मूलक उपनयासकार प्रेमचंद डॉ. महेन्द्र भटनागर, पेज–170

नागार्जुन के कथा साहित्य में भी हम ग्रामीण तथा आंचलिक महिलाओं के दुःख वेदना और वैधव की पीड़ा को पाते हैं। रतिनाथ की चाचो, समाज में व्याप्त विधवाओं के करूण दशा का दस्तावेज है, एक पात्र से नागार्जुन कहलाते हैं– कि ''जिस समाज में हजारों की तादाद में विधवाएं रहेंगी वहाँ यही सब होगा।'' माखन पाठक की पतोहू उबकर पंजाब चली गई, एक सिख के साथ रहती हैं, मैं अपनी लड़की को झाड़ू से पीटकर घर निकाला और देश निकाला दूँगी, सो मुझसे नहीं होगा। मेरे जीते–जी गौरी मुसलमान या सिख के घर जाने पर मजबूर नहीं की जा सकती।''

पेज–35

नागार्जुन के यहां पर स्त्री अस्मिता को प्रस्तुत करते है और साथ ही विधवाओं का गर्भधारण करना सामाजिक दृष्टि से पाप को कुकर्म माना जाता था पर आर्य समाज के माध्यम से एक प्रगतिशील विचारधारा को सामने लाते है कम उम्र में विधवाओं के पति, आर्य समाज विधवाओं के स्त्री गर्भवती है, संरक्षण देता है। वहां पर किसी का भी गर्भपात नहीं किया जाता हैं बच्चा पैदा होता है और माँ के इच्छा अनुसार वह या तो माँ के पास या आश्रम में रह कर बड़ा होता है।

'दुःख मोचन' उपन्यास में माया नामक विधवा और कपिल जो विधुर है। इनके माध्यम से सामाजिक ढोंग, कुरीतियों पर प्रहार करते हैं, माया और कपिल शादी करना चाहते हैं, पुनः घर बसाने की चाह है पर लड़का राजपूत और लडकी ब्राह्मण, जात–पात की गंदी साथ विजातीय शादी का विरोध करता है। पर नागार्जुन एक पात्र के मुँह से कहते हैं– ''यह ठोक हुआ विधवा लड़की ने रेडुआ लड़के से सम्बन्ध कर लिया, तो क्या बुरा किया। इधर–उधर भटकती और भष्ट्र होती तो गाँव कुल का नाम डुबाती, वह अच्छा होता कि यह अच्छा हुआ।''

सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी अपनी कहानियों में विधवाओं के दुःख–दर्द को मुख्य विषय बनाया है। हिन्दू समाज के विधवाओं की मूक व्यथा का करूणतम रूप में 'किस्मत' कहानी में पाते हैं, बाल विधवा किशोरी अपनी सौतेली सास मुन्नी की मा के अत्याचारों की ज्वाला में तिल–तिल भस्म होने के लिए विवश है। ये भोली विधवाएं किसी प्रवचन के माया जाल में फँसकर अपना सर्वनाश कर सकती हैं, इनकी दो कहानी नारी हृदय और एकादशी में पाते हैं, जो अपने संस्कारों को व्याप्त नहीं पाती हैं जिसके चलते 'असमंजस' और 'कल्याणी'

कहानियों की दोना विधवाएं पुनर्विवाह करने से अस्वीकार कर देती हैं।

कथाकार संजीव ने अपने कथा साहित्य में नारी शोषण के चरम रूप को दिखाया है 'घर चलो दुलारी बाई' कहानी में विधवा दुलारी को जेठ तथा देवर को वासना का शिकार होना पड़ता है विधवा दुलारी को अकेला पाकर जेठ और देवर दोनों भूखे शिकारी कुत्तों की तरह उस पर टूट पड़ते है। संजीव बड़े ही सुन्दर ढंग से लिखते हैं कि ''बैसवाड़े में औरतों की स्थिति शूद्रों की तरह ही थी।''

दुनिया की सबसे हसीन औरत पेज–12

'विधवा' कहानी में उग्र जी ने बाल–विवाह और विधवा का पुनर्विवाह न करने की सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते हैं, उग्र जी विधवा विवाह के समर्थक है, 'आँखों में आँसू' कहानी में कम उम्र के लड़के के साथ बडो उम्र के लड़की के विवाह के दुष्परिणाम को दिखाया गया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की अंकुर कहानी में एक गरीब लड़की पैसे वाले वृद्ध से शादी, फिर पति से न संतुष्टि पति के मृत्यु और एक बेटी का जख्म, फिर पड़ोसी युवक से प्रेम तथा शारीरिक संबन्ध हो गया हो।

राजकमल चौधरी की 'ननद भौजाई' में विधवा स्त्रियों की विवशता को दिखाया गया है जो अपनी नियति को स्वीकार कर चुकी है और साहस के साथ उसे वे झेल रही है। इस कहानी मे कामासक्त विधवा से सधमृत व्यक्ति के साथ संभोग का वर्णन है। वैष्णव कहानी में विधवा पुत्र वधू के साथ जमीदार ससुर ही सम्भोग करता है और धार्मिक होने का नाटक भी करता है।

सहस्त्र मेनका, कादम्बरी उपकथा, ननद भौजाई, वैष्णव आदि कहानियां विधवा जीवन पर आधारित है। 'सहस्त्र मेनका' एक बहुत ही संवेदन पूर्ण कहानी है, निर्मला नामक कन्या को उसके पिता मात्र सात सौ रूपये में बूढे रसोईये से सौदा के रूप में ब्याही जाती है, पति एक वर्ष बाद कोलकाता में मौत का शिकार हो जाता है। निर्मला जब ससुराल आती है तो समाज उसे अपमानित करता है चरित्रहीन कहकर, जाति से बहिष्कृत कर देता है।

''ननद भौजाई'' में विधवा स्त्री की विवशता को दिखाते है जिसे अपनी नियति मानकर विधवाएं स्वीकार कर चुकी ह। 'खरीद–बिक्री' कहानी में स्त्री की लाचारी और विवशता दिखाई देता है, रोटी–दाल के लिए मजबूर होकर वह देह का सौदा करती है और पुरूष समाज उसे इसके लिए बाध्य करता है। पुरूष द्वारा उसे विवाह का लोभ देकर उसे बार–बार धोखा दिया जाता है और उसे खरीद–बिक्री की वस्तु बना दिया जाता है। ''सती की धनुकाइन पति न रहने पर अकेली स्त्री की असहाय हो जाने की कथा है।''

हिन्दी कहानी का इतिहास–2 पेज–146

शैलेश मतियानी की कहानी 'आवरण' में दलित विधवा का जमींदार द्वारा यौन–शोषण और गर्भवती हो जाने पर उसे छोड़ देने की स्थिति का वर्णन किया है। 'दुरगुली' में भी दलित स्त्रियों को अपनी वासना का शिकार बनाते ऊँची जाति के समृद्ध लोग अपना अधिकार समझते है और विधवा साधवा सभी दलित स्त्रियों को भूख की पीड़ा शान्त करने के लिए अपनी देह का सौदा करना पड़ता है।

'सुहागिनी' में निर्धन कुरूप ब्राह्मण कन्याओं की नियति का चित्रण हुआ है। जब ऐसी ब्राह्मण कन्याओं का विवाह नहीं हो पाता तो परिवार के लोग अपने को नरक की यातना से मुक्त करने के लिए उसका 'हट–व्याह' कर देते हैं। हट–व्याह के तहत कन्या का विवाह विष्णु प्रतिमा अंकित कलश के साथ सारी वैवाहिक विधियों के साथ कर दिया जाता है। कन्या सुहागिन मान ली जाती है, ये कहानियाँ समाज के इस सत्य को उजागर करती हैं कि स्त्री चाहे व किसी भी वर्ग की हो, अपनी विवशता और दयनीयता में एक जैसी हैं 'अतोत' नायक लम्बी कहानी में एक ऐसी स्त्री के आत्म मंथन और आत्म विश्लेषण का अंकन किया गया है जो मात्र 11 वर्ष से विधवा है विवाह से पहले ही गर्भवती हो चुकने के अनुभव से गुजरी हुई है और अभी भी इतनी सुन्दर और जवान है कि पुरूषों का आकर्षण केन्द्र बनी हुई है।

'उत्सव के बाद' कहानी में शादी के दो साल बाद ही विधवा हो गई लड़की के पुनः जीवन में लौटने की अच्छो कहानी है।

पेज–291, कहानी –2

पति के मृत्यु के बाद पत्नी का गर्भवती होना भारतीय ग्रामीण समाज में मान्य नहीं है, भले ही शहर में बिन विवाह किए बच्चे पैदा करना बुरा नहीं माना जाता है। 'चाक' उपन्यास में हम देखते हैं कि रेशम अपने पति के मृत्यु के बाद गर्भवती होकर मौत के हवाले की जाती है, रेशम को उसके जेठ और सास मार डालते हैं।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि शहरी क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार से विधवाओं के दशा में कुछ परिवर्तन हुआ हैं पर ग्रामीण रूढ़ीवादी समाज में धर्म के नाम पर विधवाओं के साथ आज भी अमानवीय आचरण और मानसिक पताड़ना झेलनो पड़ रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रेमचंद का कथा साहित्यः समीक्षात्मक मूल्यांकन–डॉ. मीना गुप्ता–संजय प्रकाशन, नई दिल्ली– पे. 137
2. वही पेज–137
3. निर्मला – प्रेमचंद– सुमित प्रकाशन इलाहाबाद पेज–75
4. बालक कहानी पेज– (135) मानसरोवर – खंड (2) सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. समस्या मूलक उपन्यासकार प्रेमचंद डॉ. महेन्द्र भटनागर, पेज–170
6. रतिनाथ की चाची, नार्गाजुन, पेज–35
7. दुनिया की सबसे हसीन औरत–संजीव, पेज–12
8. हिन्दी कहानी का इतिहास भाग–(2) पेज–146 गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. वही पेज–291